महामृत्युञ्जय जपविधि

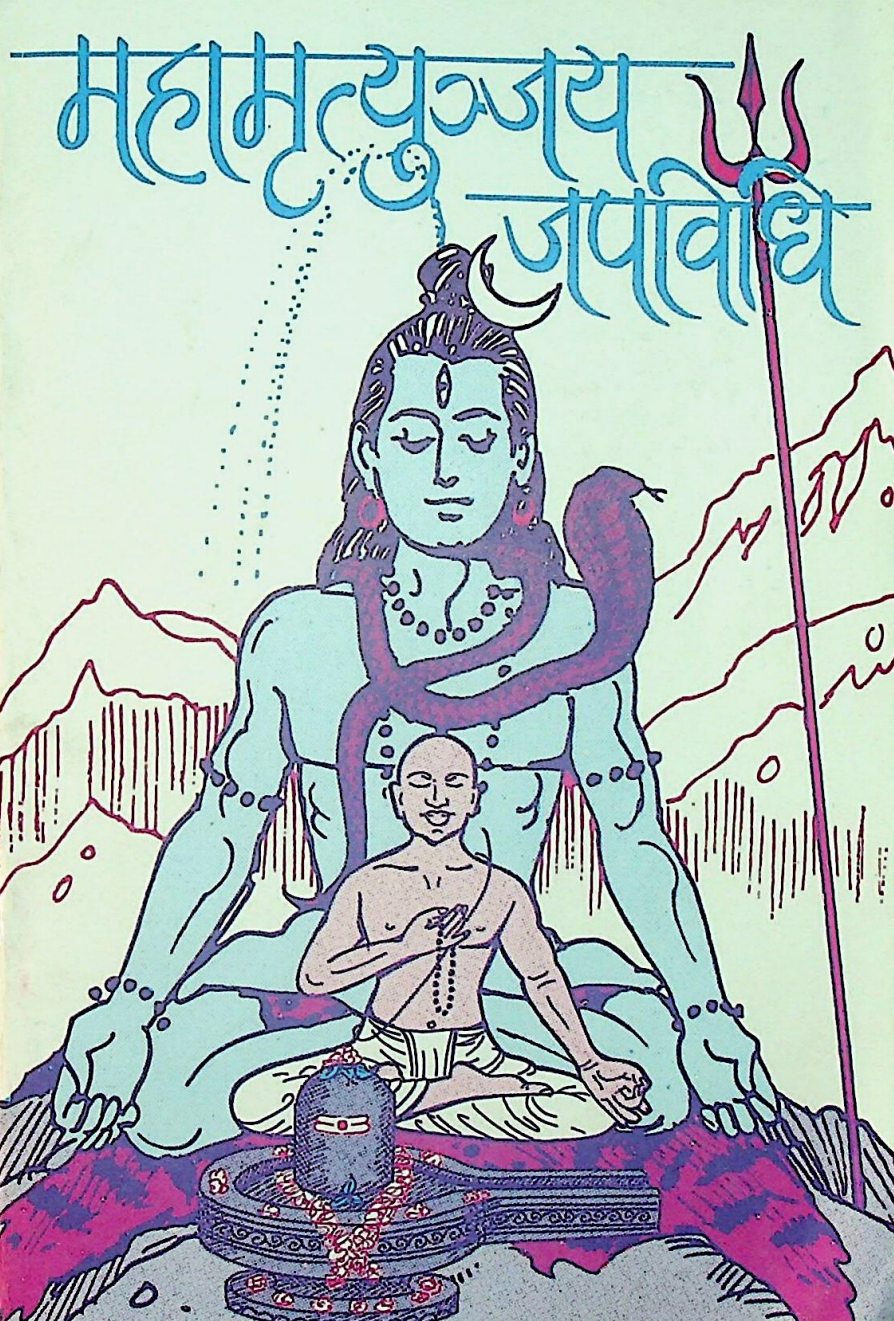

श्रीः

महामृत्युञ्जयजपविधि

हनूमानशर्मा संकलित

संस्करण : जून २०१६, सवंत् २०७३

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई

मूल्य : २० रुपये मात्र।

परिवारयुताय सांबशिवाय नमः

© सर्वाधिकार : प्रकाशक द्वारा सुरक्षित

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass,
Prop: Shri Venkateshwar Press,
Khemraj Shrikrishnadass Marg,
7th Khetwadi, Mumbai - 400 004

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl com

Printed by Sanjay Bajaj
For M/s. Khemraj Shrikrishnadass,
Proprietors Shri Venkateshwar Press,
Mumbai - 400 004, at their
Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar
Industrial Estate, Pune - 411 013

प्रस्तावना

इस देशमें महामृत्युञ्जय प्रयोगका प्रचार बहुत है। अनुष्ठानी ब्राह्मण इस प्रयोगसे अनेकों कार्य सिद्ध करते हैं। पहले यह विधि अनुष्ठानियोंके पास ही उपलब्ध होती थी और साधारण ब्राह्मण इससे अनभिज्ञ होरहे थे, यह देखकर पहले पहल मैंने संवत् १९५५ में इस प्रयोगविधिको कल्याण "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" प्रेसमें छपवा दी। इसकी प्रथमावृत्ति इतनी जल्दी बिकी कि दुबारा शुद्ध कर भेजनेके पहले ही उसकी दो आवृत्ति छपाई गई तब मैंने संवत् १९६२ में इसको कुछ विशेष उपयोगी और शुद्ध प्रति बम्बईके "श्रीवेंकटेश्वर" प्रेसमें भेजी। वहां यह संवत् १९६२-६७-७२ और ७४ में शुद्धतापूर्वक छपती रही। इसके अधिक प्रचारको देखकर बम्बईके हरिप्रसाद भगीरथजीने भी इसे छापी, किन्तु अनधिकाररूपमें मुझसे बिना पूंछे छापनेका परिणाम यह हुआ कि उनको सं १९७३ की छपी पुस्तकोंसे हानि उठानी पड़ी। इसका प्रचार इस देशमें बहुत है और कामना सिद्धिके लिये लोग इसपर बहुत विश्वास, भक्ति, श्रद्धा रखते हैं। इससे प्रयोग सम्बन्धी बहुतसे विषय इसमें संयुक्त कर दिये गये हैं। आशा है कि, सर्व साधारणको इससे अधिक लाभ होगा और वे उचितरूपसे उसको उपयोगमें लेंगे।

निवेदक—हनूमान शर्मा, जयपुरसिटी.

१ प्रयोगका प्रयोजन

महामृत्युञ्जयका प्रयोग नीचे लिखे कामोंमें प्रयोजनीय होता है, (१) यदि जन्म, मास, गोचराष्टक और दशा विदशा आदिमें ग्रहजन्य पीडा होनेका योग हो, (२) किसी महारोगसे कोई पीडित हो, (३) भाई आदिका वियोग होरहा हो, (४) नगरमें महामारी आदिसे लोग मर रहे हों, (५) राज्य जाता रहा हो, (६) धनहीनताकी ग्लानि हो, (७) किसीने शीघ्र मृत्यु होनेकी कहदी हो, (८) मेलापकमें नाडीदोष आता हो, (९) राजभय हो, (१०) मनके धर्मका विपर्यय होगया हो, (११) राष्ट्रके टुकड़े हो गये हों, (१२) मनुष्योंसे परस्परमें घोर क्लेश होरहा हो, (१३) और त्रिदोषजन्य दुर्निवार्य रोग हों तो ऐसे अवसरोंमें यथाप्रमित और यथाविधि महामृत्युञ्जयके जप करवाने चाहिये ॥

२ कार्यके अनुसार प्रयोगका प्रमाण

(१) यदि किसी प्रकारकी महामारी आदिसे या अन्य प्रकार से देशमें महाउपद्रव या अशांति हो रही हो तो ऐसे कामोंकी रोकके लिये महामृत्युञ्जयके एककरोड़ जप कराने चाहिये। (२) यदि किसी प्रकारका सामान्य रोग हो, खोटा स्वप्न हुआ हो या और कुछ भय हो तो सवा

लाख जप कराने चाहिये। (३) यदि अल्पमृत्युका भय हो अथवा कुछ संदिग्ध दुर्वार्ता सुनी हो तो दश हजार जप कराने चाहिये। (४) यदि कुछ यात्राका भय हो तो एक हजार जप कराने चाहिये। (५) और अभीष्टसिद्धिके लिये, पुत्रप्राप्तिके लिये, राज्यपद प्राप्तिके अथवा यथेच्छ मान संमान या धनलाभादिके लिये सवा लक्ष का पुरश्चरण कराना चाहिये॥

३ प्रयोगविधि

(१) कोई भी प्रयोग किसी कार्यके निमित्त किया जाय उसको शास्त्रोक्त विधिके अनुसार यथासमयही करना चाहिये। आपत्तिसे ग्रसित होजानेपर मनमाने मार्गसे ऊटपटांग काम करना अच्छा नहीं। (२) कदाचित् किसी कार्यविशेषके कारण विवश होकर अचानक सहसा प्रयोग करानेका प्रयोजन पडजाय तो उस समय अच्छी वेलामें इसका तात्कालिक प्रयोग कराना चाहिये और यदि (३) सब प्रकारकी सानुकूलता हो और किसी महत्प्रयोजनीय कार्यसिद्धिके लिये प्रयोग कराना हो तो मुहूर्तज्ञ (ज्योतिषी) से चन्द्र तारादि बलसंयुक्त अच्छे मुहूर्तका दिन निश्चय करवाके शिवालय या सौम्य देवालय अथवा किसी सिद्ध-स्थानकी कल्पना करके उसको झाड बुहार लीप पोत धोकर आसन भूमिका कूर्म शोधन और दीपस्थानको शुद्ध करे। (४) मुहूर्तके प्रथम दिन गायत्री जपादिसे प्रायश्चित करके मुहूर्तके दिन प्रातःकाल स्नान सन्ध्या देवपूजा आदि नित्य-

कृत्यसे निबटकर प्रयोग करनेके स्थान में अपने आसनपर पूर्वाभिमुख बैठकर आचमन, प्राणायाम, शांति पाठ और देवप्रणामादि करके स्वस्थचित्त और एकाग्र मन होकर जप करे। (५) कदाचित् पार्थिव पूजापूर्वक जप करने हों तो लिखित विधिके अनुसार मृन्मय महादेव शिवलिंग) बनाकर उसकी पूजा करके उसीके सान्निध्य संकल्प कर जप करे और यदि मूर्ति मौजूद हो तो उसकी पूजा करके जप करे। (६) जप करनेवाला ब्राह्मण शुद्धचेता, प्रयोग-विधिका ज्ञाता, निर्वैर, उदार, दयालु, परोपकारी, अनुष्ठानी, देवाराधक और स्वार्थशून्य होना चाहिये। कदाचित् ब्राह्मणोंकी संख्या एकसे अधिक हो तो वे भी उपरोक्त गुणसंयुक्त विषम संख्यात्मक होने चाहिये। (७) प्रयोग यदि स्वयं करे तब तो कहनाही क्या है? यदि दूसरों के द्वारा यजमानकी ओरसे हों तो यजमानका चित्त भी शुद्ध, शांत, विश्वास रखनेवाला और मौल तौल न लगानेवाला होना चाहिये। (८) प्रयोगके जपोंकी संख्या तथा स्थान, आसन, अशन और समय ये सब सदैव समान रहने चाहिये। विष-मतासे विक्षेप होजानेका सम्भव है। (९) प्रयोग यदि पुश्चरणात्मक हो तो समाप्तिके समय जप संख्याके दशांश-प्रमित हवन, हवनसंख्याके दशांशप्रमित तर्पण, तर्पण संख्या के दशांश प्रमित मार्जन और मार्जनसंख्याके दशांश प्रमित (या कार्यानुसार न्यूनाधिक) ब्राह्मण-भोजन कराना चाहिये।

(१०) और प्रयोग यदि एकही दिनका हो और हवनादि न हो सकें तो उस प्रमाणके जप अधिक कर देने चाहिये। ऐसा करनेसे अवश्य कार्यसिद्धि होती है। वर्तमान समय विधर्मियोंके संसर्गसे लोगोंके विचार बहुत बदल गये हैं। धर्म, कर्म और सदनुष्ठानोंमें लोगोंकी श्रद्धा हीन होती जाती है ऐसे कामोंके करने करानेवाले दोनोंही स्वार्थपरायण और विश्वासहीन होगये हैं। ऐसी अवस्थामें जो कुछ होता है समयोचित ही होता है। किंतु ऐसा होनेसे भारतीय सदनुष्ठानोंकी प्रतिभा प्रच्छन्न होती जाती है और निरर्थक कामोंमें व्यर्थ अर्थव्यय करनेकी गति बढ़ती है। अतः अपनी इस सम्पत्तिको सुरक्षित रखनेके लिये ब्राह्मणोंको भी जरा आगेको सोचकर निःस्वार्थी और परोपकारीपनेकी प्रकृति रखनी चाहिये।

४ हवनविधि

(१) जप हो चुके तब होमानुसार वेदी बनवाके उस पर कुशकण्डीके क्रमानुसार अग्नि स्थापन करके शास्त्रोक्त विधिसे यथापरिमित यथोचित द्रव्यका होम करना चाहिये। सामान्य हवनमें तिल, यव, घी, खाण्ड और मेवा यही मुख्य हैं किन्तु कामनाविशेष के लिए हवन भी कई द्रव्योंका करना होता है। (२) सवालक्षका पुरश्चरण किया हो तो उसमें बिल्वफल, तिल, खीर, सरसों, दूध, दही, दूर्वा, बट, पलास और खैरकी समिधा इनको सहतमें डुबोकर यथाक्रम हवन

करना चाहिये । (३) यदि किसी प्रकारकी रोग व्याधि दूर करनी हो या शत्रुसे विजय पाना हो अथवा धन सम्पत्ति और पुत्रपौत्रादि सहित दीर्घायुषी होनेकी कामना हो तो सुधावल्ली (गिलोय) की बेलके ४, ४अंगुलके टुकडोंका हवन करे । (४) लक्ष्मीप्राप्तिकी कामना हो तो बिल्वफलका हवन करे । (५) ब्रह्मत्व सिद्ध करना हो तो पलाश (छीले) की समिधा का होम करे । (६) धनप्राप्तिकी इच्छा हो तो बटकी । (७) कान्ति बढानी हो तो खैरीकी, (८)अधर्म (पाप) का नाश करना हो तो तिलोंकी, (९) शत्रुका नाश करना हो तो सरसोंकी, (१०) यश और श्रीकी इच्छा हो तो खीरकी, (११) कृत्या (मृत्यु) का क्षय करना हो तो दहीकी, (१२) रोगक्षय करना हो तो तीन तीन दूर्वाओं की, (१३) यदि प्रबल ज्वरको दूर करना हो तो अपामार्ग अर्थात् औंधाकोराकी अग्निसे पकायी हुई खीरकी, (१४) किसीको वश करना हो तो गाय के दूध और घीसे मिली हुई दूर्वाकुरोंकी (१५) और सर्व प्रकारके रोगोंसे मुक्त होना हो तो काश्मरीकी तीन तीन समिध तथा दूध और अन्नकी आहुतियों से हवन करे । हवनकी प्रत्येक आहुतिमें स्वाहा शब्द कहे और होमके पीछे एक पात्रमें जल और दूध मिलाकर उसमेंसे अंजलीमें या अर्घेमें जल लेकर ,महा-"मृत्युञ्जयं तर्पयामि" अथवा, अमुकं तर्पयामि,यह उच्चा-

रण करता हुआ तर्पण करे और दूर्वाकुरोंसे जल ले लेकर अपना आप किया हो तो अपने शरीरपर और यजमानकी ओरसे किया होतो यजमानके शरीरपर दशांश संख्यामित मार्जन करे ॥

९ संकल्पविधि

(१) विद्वानोंको किसी विषयकी विधि बताना आवश्यक नहीं किन्तु सर्वसाधारणके लिये लिखना पड़ता है कि, सब कामोंकी संकल्पहीसे सिद्धि होती है और साधारण लोग बहुधा संकल्पमें विकल्प कर देते हैं । अतःस्मरण रखना चाहिये कि, किसी भी कामनाकि लिये यजमानकी ओरसे अनुष्ठान होता हो तो कार्यारंभके पहले कामनाका सम्बोधन करके यजमानके हाथसे संकल्प करवाकर फिर प्रतिवार करनेवालेको संकल्प करना चाहिये और आप अपने लिये करे तो प्रतिदिन स्वयं संकल्प करना चाहिये । (२) संकल्पकी कल्पनामें यह ध्यान रखना चाहिये कि किस कामनाके लिये किसकी ओरसे क्या काम, किसके द्वारा कितना किया जाता है । इन बातोंका व्याकरणके अनुसार शुद्ध परिज्ञान करके संकल्प करना चाहिये । उदाहरणार्थ यहां दो चार संकल्प लिख भी देते हैं । यथा–(३) "ॐ तत्सदद्येत्यादि० अमुकगोत्रोऽमुकशर्मा ममात्मनः श्रुतिस्मृति-पुराणतन्त्रोक्तफलावाप्तये मम जन्मवर्षमास–दिन-गोचराष्टकवर्ग-दशान्तर्दशादिषु ये अनिष्ट फलकारका ग्रहास्तेषां

सानुकूलार्थं सकलाधिव्याधिझटितिप्रशमनपूर्वकदीर्घायुष्य-बलपुष्टिनैरुज्यादिसकलाभीष्टसिद्धयर्थं श्रीमहामृत्युञ्जय-प्रीत्यर्थं अमुक (शतसहस्रायुतलक्षादि) संख्यया श्रीमहा-मृत्युञ्जयमन्त्रजपमहं करिष्ये" (वा विप्रद्वारा कारयिष्ये) (४) अथवा "विषूचिकादिजनमारोपसर्गशान्त्यर्थं" वा (५) "वृष्टिकामार्थं" वा (६) "अमुकासियोगनिवृत्त्यर्थं" वा (७) अमुक दुःस्वप्ननिरसनार्थं" (८) "अमुकदिग्यात्रा-निर्विघ्नपूर्वकसिद्धयर्थं" (९) "प्रतिसन्मुखशुक्रदोष दूरी-करणार्थं" (१०) "काकमैथुनदर्शनादिसूचितसर्वारिष्ट-निवृत्यर्थं" (११) "पल्लीपतन सरठारोहणामुकदुष्टांग-स्फुरणजनिताशुभफलविनाशार्थं" (१२) अथवा "दीर्घायुः-पुत्रप्राप्त्यर्थं" (१३) "यथेच्छधनलाभार्थं,, (१४) "अमुक-पदप्राप्त्यर्थ,, (१५) "अमुककामनासिद्धयर्थं" अमुकसंख्या-परिमितं श्रीमहामृत्युञ्जयमन्त्र जपमहंकरिष्ये (वा ब्राह्मण-द्वारा कारयिष्ये(इस प्रकार जो आवश्यक हो वही कल्पना करके संकल्प करना चाहिये ।

६ प्रार्थिवपूजाविधि

शास्त्रमें मृत्तिकाकी शिवमूर्ति बनाकर उसका प्रति दिन पूजन करनेका महाफल लिखा है । पुत्रादि कामनाओंके निमित्तभी नित्य शिवार्लिंग निर्माण करके उसके समीप जप करनेसे अवश्य कार्यसिद्धि होती है । यहां उसकी निर्माण-विधि लिखते हैं–

"आचम्य प्राणानायम्ये देशकालौ संकीर्त्य अमुक गोत्रोऽमुकशर्मा अमुक कामोऽहं पार्थिवलिङ्गपूजांकरिष्ये इति संकल्प्य विभूतिरुद्राक्षधारणं कृत्वा" "सर्वाधारे वरे देवि त्वद्रूपां मृत्तिकामिमाम् । ग्रहीष्यामि प्रसन्ना त्वं लिंगार्थं भव "सुप्रभे,'।।इति भूमिं प्रार्थ्य ॐ ह्रां पृथिव्यै नम इति षड्वर्णेनाभिमन्त्र्य ॐ हराय नम इति शुचिस्थानान्मृदमाहृत्य 'वं, इत्यमृत बीजाभिमंत्रितजलप्रक्षेपेण संपीड्य तेन पिण्डेन ॐ महे श्वराय नम इति लिंगं कृत्वा स्वपुरतः ॐ शूलपाणये नम इति पीठादौ प्रतिष्ठाप्य ततः ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयःऋग्यजुः सामानि छन्दांसि क्रियामयवपुः प्राणाख्या देवता आंबीजं ह्रींशक्तिः क्रोंकीलकम् देवप्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः । ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमःशिर । ऋग्यजुः—सामच्छन्दोभ्यो नमो मुखे । प्राणाख्यदेवतायै नमो हृदि । आंबीजाय नमो गुह्ये । ह्रीं शक्तये नमःपादयोः । क्रोंकीलकाय नमः सर्वांगे इति कृत्वा पुष्पादिना शिवलिंगंस्पृशन् ॐ आंह्रीं क्रौंयंरंलंवंशंषंसंहंसःसोहं शिवस्य प्राण इह प्राणाः । ॐ आंह्रींक्रौंयंरंलंवंशंषंयंहंसः शिवस्य जीव इह स्थितः । ॐ आंह्रींक्रौंयंरंलंवंशंषंसंहंसः शिवस्य सर्वेंद्रियाणि । ॐ वाङ्मनस्त्वक्चक्षुः श्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठतु स्वाहा । एवं प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा स्थापितं शिवलिंगं पुनः स्पृशन् ॐ भूःपुरुषं सांबसदाशिवमावाहयामि । ॐ

भुवः पुरुषं सांबसदाशिवमावाहयामि । ॐ स्वः पुरुषं सांबसदाशिवमावाहयामि । इत्यावाह्य "पिनाकधारिणे नमः" इति स्नानम् । शिवाय नमः इति गन्धपुष्पाक्षतादिना संपूज्य पशुपतये नम इति नीराजनम् । महादेवाय नमः इति संहारमुद्रया जपान्ते विसर्जनम् । इति ।।

७ शिवपूजाविधि

यदि शिवालयमें शिवमूर्तिके समीप महामृत्युञ्जयके जप करने हों या रुद्राभिषेक अथवा सहस्रघटाभिषेकादि करने हों तो स्थापित शिवमूर्तिका नीचे लिखे अनुसार पूजन करना चाहिये ।

"शिवालयं गत्वा शिवसमीपे उपविश्य पूजनसामग्रीमवलोक्य आचम्यप्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य अमुक गोत्रोऽमुकशर्मा अमुककामोऽहं शिव पूजां करिष्ये तत्रादौ गणेशगौर्यादीनां नाममन्त्रेण पूजनंकृत्वा शिवपूजनं कुर्यात् ।

---

१ इस प्रकार प्रतिदिन पार्थिव पूजन और विसर्जन करना चाहिये । किन्तु यदि जप करने हों तो पूजन किये पीछे जप करके फिर विसर्जन करना चाहिये । और प्रयोग समाप्त हुए पीछे प्रतिदिन सुपूजित शिवलिंगोंको किसी एकान्त स्थानमें वापी कूप तालाव अथवा महानदमें रख देने चाहिये ।।

तद्यथा ॐ नमोस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे ।। अथोयेऽअस्यसत्वानोहंतेभ्योऽकरं नमः । शिवाय नमःपाद्यं समर्पयामि ।। १ ।। ॐ गायत्री त्रिष्टुप्जगत्यनुष्टुप्पंक्त्या सह बृहत्युष्णीहा ककुप्सुचीभिः । सम्यन्तुत्वा (शिवाय नमः अर्घ्यं समर्पयामि) ।। २ ।। एवं चतुर्थ्यंतेन सर्वत्र । ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्यो-र्मुक्षीय मामृतात् ।। इत्याचमनम् ।। ३ ।। ॐ व्वरुणस्यो त्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्यऋत सद-न्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽऋतसद नमासीद । (इतिजलस्नानम्) ।। ४ ।। ॐ पयः पृथिव्यांपयऽ ओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः । पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम् । (इति पयःस्नानम्) ।। ५ ।। ॐदधिक्राव्णोऽअकारिषञ्जि-ष्णोरश्वस्य व्वाजिनः । सुरभिनो मुखा करत्प्रणऽआयू षितारिषत् (इति दधि०) ।। ६ ।। घृतऽघृतपावानः पिबतव्वसांव्वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसिस्वाहा दिशः प्रदिशऽआदिशोव्विदिशऽउद्दिशोदिग्भ्यः स्वाहा (इति घृत० (।। ७ ।। मधुव्वाताऽ ऋतायते मधुक्षरन्तिसिन्धवः । माध्वीर्न सन्त्वोषधीः । मधुनक्तामुतोषसो मधुमत्पार्थिव ँ रजः । मधुद्यौरस्तुनः पिता । मधुमान्नोव्वनस्पतिर्म्मधुमाँऽ-अस्तुसूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तुनः (इति मधुस्नानम्) ।। ८ ।। ॐ आपा ँ रसमुद्वयस ँ सूर्येसन्तꣳ समाहितम् । अपा ँ रसस्य योरसस्तं वोगृह्ण्म्युत्तसमुपयाम गृहीतो

सीन्द्रायत्वा जुष्टङ्गृह्णाम्येषते योनिरिन्द्रायत्वा जुष्टतमम् । (इति शर्करास्नानम्) ॥ ९ ॥ ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः । सरस्वतीतु पञ्चधासों । देशे भवत्सरित् (इति पञ्चामृतस्नानम्) ॥ १० ॥ ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाःश्येतः श्येताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा अवलिप्तारौद्रानभो रूपाः पार्ज्जन्याः (इति शुद्धोदकस्नानम्) ॥ ११ ॥ ॐ प्रमुञ्चधन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम् । याश्चते हस्तऽइषवः परातामगवोवप । (इति वस्त्रं कौपीनं च) ॥ १२ ॥ ॐ ब्रह्मजज्ञानम्प्रथमं पुरस्ताद्विसीमत सुरुचावेनऽ आवः । सबुध्न्याऽउपमाअस्यविष्ठा सतश्च योनिमसतश्चविवः (इति यज्ञोपवीतम् ॥ १३ ॥ ॐ नमःश्वभ्यः श्वपतिः भ्यश्चवो नमोभवाय चरुद्राय च नमः शर्वाय च पशुपतये च नमोनीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च नमः कपर्दिने (इति गंधम्) ॥ १४ ॥ ॐ नमः शम्भवाय च मयो भवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च (इत्यक्षताः) ॥ १५ ॥ ॐ नमः पार्य्यायचावार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नमस्तीर्थ्याय च कूल्यायचनमः शष्प्याय च फेन्याय च नमः । (इतिपुष्पाणि) ॥ १६ ॥ ॐ नमोबिल्मिने च कवचिनेचनमोवर्मिणेचवरू थिनेच नमः श्रुतायच श्रुतसेनायच नमो दुन्दुभ्यायचाहनन्यायच नमो धृष्णवे । (इति बिल्वपत्राणि) ॥ १७ ॥ ॐ नमः कपर्दिनेच व्युप्त-

केशायचनमः सहस्राक्षायच शतधन्वने च नमो गिरिशायाय च शिपिविष्टाय च नमो नमो मीढुष्टमाय चेषुमतेव नमो ह्रस्वाय (इति धूपम्) ॥ १८ ॥ ॐ नम आशवेचाजिरायच नमः शीघ्रियाय च शीभ्याय चनम ऊर्म्याय चावस्वन्याय च नमो नादेयाय च द्वीप्याय च । (इति दीपम्) ॥ १९ ॥ ॐ नमो ज्येष्ठायच कनिष्ठायच नमःपूर्वजाय चापरजायच नमो मध्यमाय चापगल्भायच नमो जघन्यायच बुध्न्यायचनमः सोभ्यायच । (इति नैवेद्यम्) ॥ २० ॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम् । उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॥ (इत्याचमनम्) ॥ २१ ॥ ॐ इमा रुद्राय तवसेकपर्दिनेक्षयद्वीरायप्रभरामहे मतीः । यथा शमसद्द्विपदे चतुष्पदे विश्वंपुष्टं ग्रामेऽअस्मिन्ननातुरम् । (इति तांबूलम्) ॥ २२ ॥ ॐ हिरण्यगर्भः समवर्ततात्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत् । सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम । (इति दक्षिणाम्) ॥ २३ ॥ ततो घृतवर्त्तिकेन कर्पूरेण वा आरार्तिकां कुर्यात् । इति पूजाविधिः × ॥

× उपरोक्त अंग प्रायः शिवसंबंधी सभी प्रयोगोंके उपयोगी हैं । अतः महामृत्युंजयके अतिरिक्त रुद्राभिषेक सहस्रघटाभिषेक और त्र्यक्षरी पुरश्चरणादिमें भी इसके अनुसार काम करनेसे अभीष्ट फल मिलता है और यह शिवपूजनविधि भी प्रायः नित्य और नैमित्तिक सभी अवसरोंमें पूजन करने योग्य है ॥

८ शिवनीराञ्जनार्ति

जय गङ्गाधर हर जय गिरिजाधीशा । त्वं मां पालय नित्यं कृपया जगदीशा । हर हर हर महादेव ।। १ ।। कैलास गिरिशिखरे कल्पद्रुमविपिने । गुञ्जति मधुकरपुञ्जे कुञ्जवने गहने ।। कोकिलकूजित खेलत हंसावन ललिता । रचयति कलाकलापं नृत्यति मुदसहिता । हर ३ महादेव ।। २ ।। तस्मिन् ललितसुदेशे शालामणिरचिता । तन्मध्ये हरनिकटे गौरीमुदसहिता ।। क्रीडा रचयति भूषारञ्जित निजमीशम् । इन्द्रादिकसुरसेवित नामयते शीशम् हर० ३ म० ।। ३ ।। कर्पुरद्युतिगौरं पञ्चाननसहितम् ।। त्रिनयनं शशिधरमौलिं विषधरकण्ठयुतम् । सुन्दरजटाकलापं पावकयुतभालम् । डमरुत्रिशूलपिनाकं करधृतनृकपालम् । हर० ३ म० ।।४ ।। मुण्डे रचयति माला पन्नगहु पवीतं । वामविभागे गिरिजारूपं अतिललितम् । सुन्दरसकलशरीरे कृतभस्माभरणम् । इति वृषभध्वज रूपं तापत्रयहरणम् । हर० ३ म० ।। ५ ।। इति ।। ततो हस्ते फलपुष्पाक्षतान् गृहीत्वा । ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्तदेवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् । तेह नाकं महिमानः सचंत यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ।। मन्त्रपुष्पांजलिं दद्यात् । यानि कानि च पापानीति प्रदक्षिणा ।। अंगहीनेति क्षमाप्रार्थनां कुर्यात् इति हनूमानशर्मसंगृहीतं महामृत्युञ्जयमन्त्रस्योपयुक्तं पूर्वांगं समाप्तम् ।।

महामृत्युञ्जयजपविधि

कृतनित्यक्रियो+जपकर्ता स्वासने प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य धृतरुद्राक्षभस्मत्रिपुण्ड्रः आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य मम (वा यजमानस्य) अमुक कामना-सिद्धचर्थं श्रीमहामृत्युंजयमन्त्रस्य अमुकसंख्यापरिमितजप-महं करिष्ये । इति प्रत्याहिकं संकल्पः । ॐ गुरवे नमः । ॐ गणपतये नमः । ॐ इष्टदेवतायै नमः । इति नत्वा यथोक्त-विधिना भूतशुद्धिं प्राणप्रतिष्ठां च कुर्यात् ।।

+ जप करनेवाला नित्यक्रिया किये पीछे कृष्णाजिन, व्याघ्रचर्म, कुशा और दर्भा तथा ऊन इनमेंसे यथोचित आसनपर पूर्व या उत्तरमुख बैठकर गुरु, गणेश और इष्ट-देवका ध्यान करके पूर्वोक्त "संकल्पविधि" में कहे हुए प्रकारसे प्रतिज्ञा संकल्प करके पहले भूतशुद्धि और प्राण-प्रतिष्ठा करे ।।

१ भूतशुद्धि

ॐ तत्सदद्येत्यादि० मम अमुकप्रयोगसिद्धचर्थं भूतशुद्धिं प्राणप्रतिष्ठां च करिष्ये । ॐ आधारशक्तिकमलासनाय नमः इत्यासनं संपूज्य । पृथ्वीतिमंत्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः कूर्मो देवता । सुतलं छन्दः । आसने विनियोगः । "पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता । त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ।" गन्धपुष्पादिना पृथ्वीं संपूज्य कमलासयना भूतशुद्धिं कुर्यात् अन्यत्र कामनाभेदेन अन्यासनयापि कुर्यात् । तत्रायं क्रमः—

---

१ महामृत्युंजयादि अनुष्ठानोंमें उनकी साधनाके कोई २ अंग बड़े क्लिष्ट होते हैं । उनको यथोक्त विधिसे करना आजकलके लोगोंके लिये महाकठिन है । यहां इस भूतशुद्धिको ही देखिये, इसका यथावत् करना सबके लिये असंभव है। जिनको प्राणायामके चढ़ाने उतारने और रोकनेका अच्छा अभ्यास हो और वे उसके द्वारा अपने शरीरके किसी भी अंगके जीवको वहांसे हटाकर दूसरे स्थानमें रोक रखनेकी सामर्थ्य रखते हों वही यह भूतशुद्धि कर सकते हैं, अन्यथा ध्यानमात्र कर लेनाही अच्छा है । यह शरीर पृथ्वी जल, अग्नि वायु और आकाश इन पांच महाभूतोंसे बना-हुआ है इसके जिस २ अंगमें इन भूतोंका आधिपत्य एवं संचार है और जहां२यह निजस्वभावके अनुसार कार्य करते-

पदादि+जानुपर्यंतं पृथ्वीस्थानं तच्चतुरस्रं पीतवर्णं ब्रह्मदैवतं वज्रलांछितं वमितिबीजयुक्तं ध्यायेत् । जान्वादिनाभिपर्यंतम् आपस्थानं तच्चार्द्धचन्द्राकारं शुक्लवर्णं पद्मलांछितं विष्णुदैवतं लमिति बीजयुक्तं ध्यायेत् । नाभ्यादि कंठपर्यंतं अग्निस्थानं त्रिकोणाकारं रक्तवर्णं स्वस्तिकलांछितं रुद्रदैवतं रमितिबीजयुक्तं ध्यायेत् । कण्ठादि भ्रू पर्यन्तं

-हैं उन स्थानोंके स्वरूपका यथावत् अवलोकन करके पृथ्वी आदि तत्त्वोंको एक दूसरेमें मिलाने स्थिर रखने और फिर सबको यथास्थान करनेसे भूतशुद्धि अर्थात् प्राणवायुकी शुद्धि होती है ऐसा करनेसे वह मनुष्य महर्षि तुल्य होकर दैवीशक्तिसे संयुक्त हो जाता है फिर उसके किये हुए प्रायः सभी प्रयोग सफल हो सकते हैं ।।

+ शरीरमें पांवोंसे जंघापर्यन्त पृथ्वीस्थान चौकोर—पीतवर्ण, ब्रह्मदैवत, वज्रचिह्न और वं बीजसे युक्त है । जंघासे नाभिपर्यन्त जलस्थान, अर्द्धचन्द्राकार श्वेतवर्ण कमल चिह्नसे युक्त विष्णुदैवत और लंबीजका है । नाभिसे कंठतक अग्निस्थान, त्रिकोण, रक्तवर्ण, स्वस्तिकसे चिह्नित, रुद्रदैवत और रं बीजसे युक्त है । कंठसे भ्रू पर्यंत वायुस्थान, षट्कोण, कृष्णवर्ण छः बिन्दुसे चिह्नित ईश्वर दैवत और यं बीजसंयुक्त है और भ्रूसे कपालतक आकाशस्थान, गोलाकार, ध्वजलांछित धूम्रवर्ण, सदाशिव दैवत और हं बीजसे संयुक्त है ।

वायुस्थानं षट्कोणाकारं षड्बिंदुलांछितं कृष्णवर्णम् ईश्वर-दैवतं यमिति बीजयुक्तं ध्यायेत् । भ्रूमध्यादि ब्रह्मरंध्र-पर्यन्तम् आकाशस्थानं वृत्ताकारं ध्वजलांछितं सदाशिव-दैवतं हमिति बीजयुक्तं ध्यायेत् । एवं स्वशरीरे पञ्चमहा-भूतानि ध्यात्वा प्रविलापनं कुर्यात् । तद्यथा-पृथ्वीमप्सु। अपोऽग्नौ । अग्निं वायौ । वायुमाकाशे । आकाशं तन्मात्रा-हंकारमहदात्मिकायां मातृकासंज्ञक शब्द ब्रह्मस्वरूपायां हृल्लेखार्द्धभूतायां प्रकृतिमायायां प्रविलापयामि । तथा त्रिविधां मायां च नित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभावे स्वात्मप्रकाश-रूपे सत्यज्ञानानन्तानन्दलक्षणे परकारणे परमार्थभूते पर-ब्रह्मणि प्रविलापयामि । तच्च नित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभावं सच्चिदानन्दस्वरूपं परिपूर्णं ब्रह्मैवाहमस्मीति भावयेत् । एवं ध्वात्वा । यथोक्तस्वरूपात् प्रणवात्मकात् परब्रह्मणः सकाशात् हृल्लेखार्द्धभूता सर्वमन्त्रमयी मातृकासंज्ञका शब्द-ब्रह्मात्मिका तदहंकारादिपञ्चतन्मात्रादिसमस्त प्रपञ्चा कारणभूता प्रकृतिरूपा माया रज्जुसर्पवत् विवर्तरूपेण प्रादु-र्भूता इति ध्यात्वा । तस्या मायायाः साकाशात् यथोक्तमा-काशमुत्पन्नम् । आकाशाद्वायुरुत्पन्नः । वायोरग्निः । अग्ने-रापः । अद्भ्यः पृथ्वी समजायत इति ध्यात्वा । तेभ्यः पञ्चमहाभूतेभ्यः सकाशात् स्वशरीरं तेजःपुञ्जात्मकं पुरु-षार्थसाधनदेवयोग्यमुत्पन्नमितिध्यात्वा । तस्मिन् शरीरे-

सर्वात्मकं सर्वज्ञं सर्वशक्तिसंयुक्तं समस्तदेवतामयं सच्चिदानंद स्वरूपं ब्रह्मात्मरूपेणानुप्रविष्टमिति भावयेत् + ॥

इति भूतशुद्धिः ।

---

१० प्राणप्रतिष्ठा

अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः ऋग्यजुः सामानि छन्दांसि प्राणशक्तिर्देवता आं बीजं ह्रीं शक्तिः क्रौं कीलकं प्राणस्थापने विनियोगः । ङं कं खं घं गं नमो वाय्वग्निजलभूम्यात्मने हृदयाय नमः । ञं चं छं झं जं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने शिरसे स्वाहा । णं टं ठं ढं डं श्रोत्रत्वङ्नयनजिह्वाघ्राणात्मने शिखायै वषट् । नं तं थं धं दं वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने कवचाय हुम् । मं पं फं भं वं वक्पव्यादानगमनविसर्गानन्दात्मने नेत्रत्रयाय वौषट् । शं यं रं वं लं हं षं क्षं सं बुद्धिमनोऽहंकारचित्तात्मने अस्त्राय फट् । एवं करन्यासं कृत्वा ततो नाभितः पादपर्यन्तं आं नमः । हृदयतः नाभिपर्यन्तं ह्रीं नमः । मूर्द्धादिहृदयपर्यन्तं क्रौं नमः । ततो हृदयकमले न्यसेत् । यं त्वगात्मने नमः वायुकोणे । रं रक्तात्मने नमः अग्निकोणे लं मांसात्मने नमः पूर्वे । वं मेदात्मने नमः पश्चिमे । शं अस्थ्यात्मने नमः नैर्ऋत्ये ।

+ उपरोक्त विषय उत्कृष्ट योगाभ्यासियों और मंत्र-तंत्रके तत्त्वज्ञ विद्वानोंके कामका है इस लिये इसका आशय संक्षेपसे लिखना अनपयोगी समझकर इसे छोड़ दिया है ।

षं शुक्रात्मने नमः उत्तरे । हं प्राणात्मने नमः दक्षिणे । सं जीवात्मने नमः मध्ये । एवं हृदयकमले न्यसेत् । ध्यानम्-रक्ताम्भोधिस्थपोतोल्लसदरुणसरोजांघ्रिरूढा कराब्जैः पाशं कोदण्ड मिक्षूद्भवमथ गुणमप्यंकुशं पंच बाणान् । बिभ्राणा-सृक्कपालं त्रिनयनलसिता पीनवक्षोरुहाढ्या देवी बाला-कवर्णा भवतु शुभकरी प्राणशक्तिः परा नः ।। १ ।।

इति प्राणप्रतिष्ठा × ।।

११ जपविधि

तत्र+संध्योपासनादिनित्यकर्मानन्तरं भूतशुद्धिं प्राण-प्रतिष्ठां च कृत्वा जपकर्ता प्रतिज्ञासंकल्पं कुर्यात् ।। ॐ तत्स-दद्य मासोत्तमे मासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोऽमुकशर्मा मम शरीरे ज्वराद्यमुक-रोग निरसनद्वारा सद्य आरोग्यलाभार्थं वा धनपुत्र यशः सौख्यादि अमुककामनासिद्धयर्थं श्रीमहामृत्युञ्जयदेव-प्रीति-

× भूतशुद्धि करनेमें प्राणवायुकी स्वच्छन्दता रोककर गतिप्रवाह और गत्यवरोधादिके द्वारा उसको आक्लांत और स्वाधीन रखनेमें श्रम दिया गया था उसको मिटाकर यथा-वत् प्राणवायुका सञ्चार होता रहनेके हेतुसे यह प्राण-प्रतिष्ठा की जाती है किन्तु यह भी ध्यान मात्रसे ही होती है ।।

+ जप करनेवाला संध्योपासनादि नित्यकर्म तथा भूत-शुद्धि आदि पूर्वोक्त कर्म किये पीछे यह संकल्प करे ।।

कामनयाअमुक संख्यापरिमित महामृत्युञ्जयजपमहं करिष्ये। अस्य श्रीमहामृत्युञ्जयमंत्रस्य वसिष्ठ ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः श्रीत्र्यंबकरुद्रो देवता श्रींबीजं ह्रींशक्तिः मम अभीष्ट-सिद्धयर्थे जपे विनियोगः×। ॐ वसिष्ठऋषये नमः शिरसि । अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे । श्रीत्र्यम्बकरुद्रदेवतायै नमः हृदि । श्रीं बीजाय नमः गुह्ये । ह्रीं शक्तये नमः पादयोः । इति ऋष्यादिन्यासः । अथ करन्यासः ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यंम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्व यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवय तर्जनीभ्यां नमः । ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्व सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा मध्यमाभ्यां वषट् । ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुव : स्वः उर्वारुकमिवबन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रां अनामिकाभ्यां हुम् । ॐ हौं ॐ

× प्रत्येक प्रयोगमें पहले प्रतिज्ञा संकल्प फिर विनियोग फिर न्यास ध्यान किया जाता है इस नियमके अनुसार यहां-भी पहले विनियोग करके वसिष्ठऋषये नमः शिरसि आदिसे शिर, मुख, हृदय, गुह्य और पांव इनमें न्यास करे । फिर ॐ ह्रीं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः आदिका उच्चारण करते हुए 'करन्यास' करे । अर्थात् मंत्रोच्चारण पूर्वक इनका स्पर्श करे ।

जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुःसाममन्त्राय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् । ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् । इति करन्यासः ।। अथ हृदयादिन्यासः—×ॐ हौंॐजूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयाय नमः । ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवय शिरसे स्वाहा । ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा शिखाये वषट् । ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिवबन्धनात् ॐनमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकायह्रां ह्रीं कवचाय हुम् । ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः—साममंत्राय नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वलज्वल मां रक्षरक्ष अघोरास्त्राय फट् । इति ।। अक्षरन्यासः—त्र्यं नमः दक्षिणचरणाग्रे । बं नमः कंनमः यंनमः जांनमः दक्षिणचरणसन्धिचतुष्केषु । मं नमः वामचरणाग्रे हें नमः सुंनमः

× पूर्वोक्त रीतिके अनुसार करन्यासकी तरह मंत्रोच्चारणपूर्वक हृदय, शिर, शिखा आदिको स्पर्श करे ।।

गंनमः धिंनमः वामचरणसंधिचतुष्केषु । पुंनमः गुह्ये । ष्टिंनमः आधारे । वंनमः जठरे । द्धंनमः हृदये । नंनमः कंठे । उंनमः दक्षिणकराग्रे । वींनमः रुंनमः कंनमः सिंनमः दक्षिणकरसंधिचतुष्केषु । वंनमः वामकराग्रे । बंनमः धंनमः नां नमः मृंनमः वामकरसन्धिचतुष्केषु । त्यों नमः वदने । मुं नमः ओष्ठयोः । क्षींनमः घ्राणयोः । यंनमः दृशोः । मांनमः श्रवणयोः । मृंनमः भुवोः । तां नमः शिरसि । इति अक्षरन्यासः×।। पन्यासः—त्र्यंबकं+शिरसि । यजामहे भ्रुवोः

×अक्षरन्यासमें मूलमंत्रके प्रत्येक अक्षरसे शरीरके प्रत्येक अंगको स्पर्श करके न्यान करना चाहिये । अंगोंके नाम स्पष्ट लिखे हैं । संधिचतुष्क अर्थात् हाथ पाँवमें जहां जहां जोड़ हैं वे चारों हैं और गुह्यस्थान छुपा हुआ अंग है ।।

+ पदन्यासमें मूलमन्त्रके पदोंसे शिर, सँवारे, नेत्र और मुख आदिका स्पर्श करता हुआ पदन्यास करे । न्यास करना जप करने योग्य होता है । जिस भांति युद्धभूमिसे विजय-विभूति लानेके निमित्त युद्धार्थीको अस्त्रशस्त्रादि सब सामग्री से सुसज्जित होना पड़ता है ठीक उसी तरह प्रयोगादिसे अभीष्टसिद्धि प्राप्त करनेके लिये अनुष्ठानीको भी भूतशुद्धि, प्राणप्रतिष्ठा, ऋष्यादिन्यास, अंगन्यास, करन्यास और वर्ण-न्यासादि बहुविधविधियोंसे शरीरको प्रयोगके योग्य करना पड़ता है और फिर तन्मय होके जिस देवतासे जो काम लेना हो उसका तादृश ध्यान करना पड़ता है ।।

सुगन्धि दृशोः । पुष्टिवर्द्धनम् मुखे । उर्वारुकं कण्ठे । इव हृदये । बन्धनात् उदरे । मृत्योः गुह्ये । मुक्षीय ऊर्वोः । मा जान्वोः । अमृतात् पादयोः । इति पदन्यासः ।। ध्यानम्—हस्ताभ्यां × कलशद्वयामृतरसैराप्लावयन्तं शिरो द्वाभ्यां तौ दधतं मृगाक्षवलये द्वाभ्यां वहन्तं परम् । अंकन्यस्तकरद्वया-मृतघटं कैलासकान्तं शिवं स्वच्छाम्भोजगतं नवेन्दुमुकुटा-भातं त्रिनेत्रं भजे ।। ४ ।।

मृत्युंजय महादेव त्राहि मां शरणागतम् । जन्ममृत्युजरारोगैः पीडितं कर्मबन्धनैः ।।१।। तावकस्त्वद्गतप्राणस्त्वच्चित्तोऽहं सदा मृड । इति विज्ञाप्य देवेशं जपेन्मृत्युञ्जयं मनुम् ।। २ ।।

मूलमंत्र×:—ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यंबकं यजामहे

यहां अष्ट भुजावाले शिवजीका ध्यान किया है जो दो हाथोंमें अमृतके दो कलशलिये हुए हैं । अन्य दो हाथोंमें अमृतरसको शिरमें लपेटते हैं तथा दो हाथोंसे अमृत घट गोदमें रख रहे हैं और दो हाथोंमें मृग और रुद्राक्षमाला धारण किये हुए हैं ऐसे कैलासकांत स्वच्छांभोजगत—नवेंदु-मुकुटसे सुशोभित और त्रिनेत्र शिवजीसे अपने अभीष्ट सिद्धि और रक्षापानेकी प्रार्थना की है ।।

× न्यासादि किये पीछे रुद्राक्षकी मालाको मूलमन्त्रसे अभिमंत्रित करके मध्यमा और अंगुष्ठ इन दोनोंके मध्य-पर्वसे मणियोंको चलाते हुए एकाग्र चित्तसे दृढतापूर्वक उप-रोक्त मन्त्रका जप करे।और जप किये पीछे फिर पूर्वोक्त—

सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् । भूर्भुवः स्वरों जूं सः हौं ॐ ॥ १ ॥ एतन्मंत्रं यथासंख्यं प्रजप्य पुनर्न्यासं कृत्वा जपं भगवन्महामृत्युञ्जयदेवतायै समर्पयेत् । गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देवत्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ १ ॥

इति महामृत्युञ्जयजपविधिः समाप्तः ॥

---

१२ ग्रन्थान्तरोक्तजपविधिः

ऊपर जो विधि लिखी गई वह इस देशमें प्रायः सर्वत्र प्रचलित है और अनुष्ठानीलोगोंको विशेषतया यही अभ्यस्त हो रही है । किन्तु 'मन्त्रमहोदधि' आदि अनेको ग्रन्थोंमें जो महामृत्युंजय जपविधि लिखी है उसमें और इसमें

रीतिसे अंगन्यास करके समाप्त करे । इस प्रकार आरम्भसे समाप्तिपर्यन्त इस प्रयोगके करने करानेसे अवश्य ही यथेच्छ फल मिलता है । शास्त्रोंमें लिखा है कि, देवासुर संग्रामके समय असुरोंके अधिक संहारसे अकुलाकर दैत्य जब पीठ फेरने लगे तब उनके गुरु शुक्राचार्यने अपने यज्ञशालामें इसी महामृत्युंजयके अनुष्ठानोंका आयोजन किया और मृत दैत्योंको सजीव करके युद्धार्थ पुनः प्रोत्साहित किये । इस कारण यह अनुष्ठान "अमृतसंजीवनी" नामसे भी विख्यात हो गया ॥

कुछ स्वरूपान्तर है अतएव सबके लाभके लिये यहाँ उस विधिको भी प्रगट कर देते हैं वह ,महामृत्युंजयजपविधि, इस प्रकार है–

अस्य श्रीमहामृत्युंजयमन्त्रस्य वामदेवकहोलवसिष्ठा ऋषयः। पंक्तिगाय्यनुष्टुप्छन्दांसि। सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रो देवता ह्रीं शक्तिः। श्रीं बीजम्। महामृत्युंजयप्रीतये ममाभीष्टसिद्धचर्थे जपे विनियोगः। ऋष्यादिन्यासः–ॐवामदेवकहोलवसिष्ठऋषिभ्यो नमः मूर्ध्नि। ॐ पंक्तिगाय्यनुष्टुपछन्दोभ्यो नमः वक्त्रे। ॐ सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रदेवतायै नमः हृदि। ॐह्रीं शक्त्यै नमः लिङ्गे। ॐ श्रींबीजाय नमः पादयोः।। करन्यासः ॐ हौं जूँ ॐ सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवय तर्जनीभ्यां नमः। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगंधिं पुष्टिवर्धनं ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा मध्यमाभ्यां नमः। ॐहौं ॐ जूंसःभूर्भुवः स्वःउर्वारुकमिवबन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्रायत्रिपुरांकाय ह्रीं ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ हीं ॐ जूंसः भूर्भुवःस्वः मृत्यो मुक्षीयॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साममन्त्राय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ हो जूं सः भूर्भुवः स्वः मामतात् ॐ नमो भगवते

रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्षरक्ष अघोरास्त्राय करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः । एवं हृदयादिन्यासं कुर्यात् ।। वर्णन्यासः ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवःस्वः त्र्यँनमः पूर्वमुखे ।। १ ।। ॐ हों ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः वंनमः पश्चिमुखे ।। २ ।। ॐ हों ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः कंनमः दक्षिणेमुखे ।। ३ ।। ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः यंनमःउत्तर मुखे ।। ४ ।। ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः जांनमः उरसि ।। ५ ।। ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः मंनमः कण्ठे ।। ६ ।। ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः हें नमः मुखे ।। ७ ।। ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः सुंनमः नाभौ ।। ८ ।। ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वःगंनमः हृदि ।। ९ ।। ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः धिनमः पृष्ठे ।। १० ।। ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः पुंनमः कुक्षौ ।। ११ ।। ॐ ॐ जूंसः भूर्भुवःस्वः ष्टिनमः लिंगे ।। १२ ।। ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुव स्वः वंनमः गुदे ।। १३ ।। ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः धंनमः दक्षिणोरुमूले ।। १४ ।। ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः नंननमः वामोरुमूले ।। १५ ।। ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः उंनमः दक्षिणोरुमध्ये ।। १६ ।। ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः वांनमः वामोरुमध्ये ।। १७ ।। ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुव स्वः रुंनमः दक्षिणजानुनि ।। १८ ।। ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वःकंनमः वामजानुनि ।। १९ ।। ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः मिंनमः दक्षिणजानुवृत्ते ।। २० ।। ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः वंनमः वामजानुवृत्ते ।। २१ ।। ॐ हौं ॐ जूंसः

भूर्भुवः स्वः बंनमः दक्षिणस्तने ।। २२ ।। ॐ हौं ॐ जूंसः
भूर्भुवः स्वः धंनमः वामस्तने ।। २३ ।। ॐ हौं ॐ जूंसः
भूर्भुवः स्वः नां नमः दक्षिणपार्श्वे ।। २४ ।। ॐ हौं ॐ जूंसः
भूर्भुवः स्वः मृंनमः वामपार्श्वे ।। २५ ।। ॐ हौं ॐ जूंसः
भूर्भुवः स्वः त्यों नमः दक्षिणपादे ।। २६ ।। ॐ हौं ॐ जूंस
भूर्भुवः स्वः सुंनमः वामपादे ।। २७ ।। ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः
स्वः क्षीं नमः दक्षिणकरे ।। २८ ।। ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुव
स्वः यं नमः वामकरे ।। २९ ।। ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः
मां नमः दक्षिणनासायाम् ।। ।। ३० ।। ॐ हौं ॐ जूंसः
भूर्भुवः स्व मृंनमः वामनासायाम् ।। ३१ ।। ॐ हौं ॐ जूंसः
भूर्भुवः स्वतः तां नमः मूर्घ्नि ।। ३२ ।। पदन्यासः—ॐ त्र्यंबकं
शिरसि ।। ॐ यजामहे भ्रुवोः ।। ॐ सुगंधि नेत्रयोः ।। ॐ
पुष्टिवर्द्धनं मुखे ।। ॐ उर्वारुकं गंडयोः ।। ॐ इव हृदये ।।
ॐ बन्धनात् जठरे ।। ॐ मृत्योः लिंगे ।। ॐ मुक्षीय ऊर्वोः ।।
ॐ मा जान्वोः ।। ॐ अमृतात् पादयोः ।। मूलेन व्यापकं कृत्वा
ध्यायेत् ।। ध्यानम् ।। हस्ताम्भोज युगस्थकुम्भ युगलादुद्-
धृत्यतोयं शिरः सिञ्चन्तंकरयोर्युगेन दधतंस्वांके सकुम्भौ-
करौ । अक्षस्रङमृगहस्तमम्बुजगतं मूर्द्धस्थचन्द्रस्रवत्पीयू-
षोन्नतनुं भजे सगिरिजं मृत्युञ्जयं त्र्यंबकम् ।। ११ ।। इति
ध्यात्वा मूलमन्त्रं जपेत् ।

इति ग्रन्थोन्तरोक्तजपविधि ।।

१३ त्र्यंक्षरीमंत्रजपविधिः

अस्य श्रीत्र्यक्षरीमृत्युञ्जयमन्त्रस्य कहोल ऋषिः । देवी गायत्री छन्दः श्रीमृत्युंजयो देवता जूं बीजं सः शक्तिः अभीष्ट-सिद्धयर्थे जपे विनियोगः । अङ्गन्यासः—कहोलऋषये नमः शिरसि । देवीगायत्रीछन्दसे नमः मुखे । मृत्युञ्जयदेवतायै नमः हृदि । जूं बीजाय नमः गुह्ये। सः शक्तये नमः पादयोः ।। करन्यासः—सां अंगुष्ठाभ्यां नमः । सीं तर्जनीभ्यां नमः । सूं मध्यमाभ्यांनमः सैं अनामिकाभ्यां नमः । सौं कनिष्ठि-काभ्यां नमः । सःकरतलकर पृष्ठाभ्यां नमः ।। हृदयादि-न्यासः—सां हृदि । सीं शिरसि । सूं शिखायै । सैं नेत्रत्रयाय । सौं कवचाय । सः अस्त्राय इति । ध्यानम्—चन्द्रार्काग्नि-विलोचनं स्मितमुखं पद्मद्वयान्तः स्थितं मुद्रापाशमृगाक्ष-सूत्रविलसत्पार्णि हिमाशुप्रभम् । कोटीरेन्दुगलत्सुधास्नुततनुं

---

१ त्र्यक्षरी मन्त्र ,,ॐ जूंसः इतना ही है । सामान्यतः इसीके जप होते हैं । किन्तु किसीके रक्षाके निमित्त करने हों तो "ॐ जूंसः अमुकं पालय २ सः जूं ॐ" और शत्रु रोगादि दूर करने हों तो "ॐ जूंसः अमुकं नाशय २ साः जू ॐ" इसके जप करने चाहिये यही विशेषता है ।।

हारादिभूषोज्ज्वलं कान्त्या विश्वविमोहनं पशुपतिं मृत्युञ्जयं भावयेत् ।। १ ।। इति मूलमन्त्रं प्रजप्य पुनर्न्यासादिकं विधाय जपं महामृत्युञ्जयदेवतायै समर्पयेत् ।।

इति त्र्यक्षरीमन्त्रजपविधिः ।

इति श्रीहनूमानशर्म संगृहीतमहामृत्युञ्जय-
मन्त्रजपविधिः समाप्तः

पुस्तकें मिलने के स्थान

१) खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
खेतवाडी, मुंबई - ४००००४

२) खेमराज श्रीकृष्णदास,
६६, हडपसर इण्डस्ट्रिअल इस्टेट
पुणे - ४११०१३

३) गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
व बुक डिपो,
अहिल्याबाई चौक, कल्याण
(जि.ठाणे- महाराष्ट्र)

४) खेमराज श्रीकृष्णदास,
चौक - वाराणसी (उ.प्र.)

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS